काव्य संग्रह

समर्पण

सौ. रूपाली रूपेश बाहेती

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

समर्पण

काव्य संग्रह

रुपाली बाहेती

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-048-3"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **रूपाली बाहेती**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

SAMARPAN BY RUPALI BAHETI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मेरे विचार

भाषा एक सशक्त साधन है, अपने विचार और भावनाऐं प्रकट करने का और फिर वह भी चार व्यक्ति पारिवारिक सामाजिक राष्ट्रीय या कोई और हो। १ दिन बैठे-बैठे मेरे भी मन रूपी सरोवर में विचारों की कुछ कमल खिलने लगे। उनमें से सबसे प्यारा कमल था, इस विचारधारा का कि क्यों न अपनी राष्ट्रभक्ति की भावना को कवितारूपी माला में गूथकर के ईश्वर समान श्रोताओं के सामने रखा जाए। वैसे तो विचारों की यह लहरें कई सालों से निरंतर चल रही थी, परंतु उस दिन शायद मेरे हृदय में, मेरे विचारों में वीणा वादिनी सरस्वती का वास था। क्योंकि मन में यह विचार चल रहे थे, तभी अचानक नागपुर से कविता जी कौशिक नामक दोस्त का फोन आया और उन्होंने शब्द सुगंधा अंतरा शक्ति का प्रस्ताव मुझे बताया। वैसे तो राष्ट्रभक्ति की जोत बड़ी दृढ़ता से मेरे अंदर निरंतर जल रही थी। बस मुझे इंतजार था सही समय का, सही मौके का और वही मौका मेरे लिए लेकर आया नागपुर का शब्द सुगंध व अंतरा शब्दशक्ति का प्रस्ताव। मैंने तुरंत हाँ कर दी और उसी दिन से शुरू हो गया नयें विचारों का, नया लीखान और वीणा धारिणी सरस्वती के आशीर्वाद से आपके सामने में रख रहे हो देशभक्ति का केसरिया रंग। इसी के साथ व्यक्त कर रहे हो नारी के मन की भावना। आवाज उठा रही हूँ पुरुष प्रधान संस्कृति की कुरीतियों पर। इसी के साथ नीरजा भनोट महाराणा प्रताप जैसे वीरों के जीवन पर भी डाली है, हल्की सी एक नजर।

आशा है मेरी एक छोटी सी कोशिश, मेरा एक हल्का सा प्रयास, आप सभी के दिल में उतर जाएगा और मेरे अंदर छपा हुआ राष्ट्रपति का केसरिया या आपके मन का रंग आपके मन को रंग जाएगा। मेरी

रचनाओं में से मेरे दो शब्द भी अगर आपके दिल को छु जाए या आपको प्रेरित करें राष्ट्रभक्ति की ओर तो जरुर संपर्क कीजिएगा। मैं साथ में ही अपना कांटेक्ट नंबर दे रही हूँ। आप मुझे गूगल पर भी नेपाली बाहेती स्पीच के नाम से सर्च कर सकते हैं। फेसबुक पर भी वीरू रूपेश बाहेती के नाम से आप मेरे कार्यों को देख सकते हैं। आशा है मेरी एक छोटी सी भूमिका मेरे विचार आपके दिल में उतर जायेंगे।

आपकी अपनी नूतन लेखिका
सौ. रुपाली रूपेश बाहेती

अनुक्रमणिका

1.	जयतु-जयतु जय हिंदुस्तान	७-८
2.	नारी न भूल	९
3.	पुलवामा हमले ने कर दिया साबित	१०
4.	भाग..भाग.. भाग रे फिरंगी	११
5.	माँ की कोख से	१२
6.	परिवर्तन की ओर	१३
7.	तुम्हारी जय हो!	१४
8.	वह रे पुरूष!	१५
9.	नारी को अबला कहने	१६
10.	काश! काश! काश!!	१७
11.	तुम ही तो हो मेरा कर्ण	१८
12.	महाभारत की रणदुदुंभी बजायी है	१९-२०
13.	याद करो पुरूष	२१
14.	बेटी हो तो निरजा जैसी	२२
15.	धिक्कार है	२३-२४
16.	हो रहा है, संस्कारों का दहन	२५-२६

17.	ले चलो पुर्णत्व की ओर	२७
18.	५६ इंच सीना तान कर	२८-२९
19.	मौका मिलते ही कलम बोल पड़ी	३०-३१
20.	मुझ को है अपने पंखो पर विश्वास	३२

जयतु जयतु जय हिंदुस्तान

उन्होंने कहा हमे कुछ पंक्तियों मे कर दिखाओ अपने देश का गुणगान,
मैंने कहा वो कोई जमीन टुकड़ा नहीं हमें गर्व है उसपर
भारत है उसका नाम।

सोचने लगी दौड़े आये जो शुरु किया मैंने भारत माँ का गुनगान।
शब्दों ने बढ़-चढ़कर की विनती कि हिंदुस्तान पर लिख रहे हो
तो हमें भी दिला दो थोड़ा सा सन्मान।

फिर क्या था, शुरू हो गये शब्द और मैं,
माँ भारती के चरणों में झुककर किया प्रणाम।

मित्रों, बड़ी रंग-रंगीली संस्कृति यहाँ की इतिहास भी गौरवशाली है।
हमने जन्म लिया इस घर पर सचमुच हम भाग्यशाली हैं।

मुड़कर जो पीछे देखें तो सोने की चिड़िया मुझे नजर आयी है,
अंगेजों ने जो डाली बुरी नजर स्वतंत्रता संग्राम की छिड़ गई लड़ाई है।

आज जो देखते है हम दुनियाभर में तिरंगो की शान।
इसे बढ़ाने की खातिर कई वीर वीरांगनाऐं हो गये कुर्बान।

हमारी धरती ऐसी, जिसमे कलाम और अटल ने मिलकर
तिरंगे को फहराया है।
यहाँ की युवा पीढ़ी ने भी तो अपनी विद्वता का परचम
दुनियाभर में लहराया है।

राम-कृष्ण की धरती पर जन्मे हम, धन्य हो गया हमारा जीवन।
यहाँ पर तो नये अविष्कारों के साथ संतो का भी होता है हरपल आगमन।

देश की बात चले तो फिर याद आये मुझे सरहद पर खड़े मेरे जवान।
कैसे भूल जाऊँ मैं जो खाती हूँ अन्न, उसे बड़े प्यार से सींचता
है देश का किसान।

आगे और जो लिखने बैठूँ तो कहीं सूख न जाये समुंदर
क्या बताऊ देश प्रेम की कितनी लहरें है इस दिल के अंदर।
अंत में इतना ही कहूँगी

हे! मातृभूमि गौरव तेरा बढ़ता रहे।
तू और तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम रहें न रहें।

कल्याणकारी समाज का हो यहाँ निर्माण,
धरती अंबर से गुंजता रहे एक मात्र नारा
जयतु, जयतु जय हिंदुस्तान।

नारी न भूल

नारी न भूल तू ही तो नरवीरों की खान है,
उठ जाग तुझे फिर से पुकारता तेरा हिंदुस्तान है।
मत भूल प्रताप, शिवा तेरी ही तो देन है इस धरती पर,
आँखे खोल देख जरा कैसे आक्रमण हो रहा है संस्कृति पर।
याद कर कितना बलशाली था भरत इस माँ शकुंतला की संतान,
उसके नाम से ही तो अपनी धरा ने पायी न भारत नाम की पहचान।
कितना सुनहरा इतिहास अनगिनत वीर माताऐं,
अनोखे बच्चो को थी जन्म देती,
माँ का गर्भ था समुंदर सा गहरा और बच्चे उसके अनमोल मोती।
क्या था वो जमाना था और कितना सुहाना था वो दौर,
किसी की हिम्मत न थी की बुरी नजर डाले मातृभूमि की ओर।
और आज तो ये आलम है कि माँ की कोख मे ही पल रहे है
देश के गद्दार।
कहाँ गई हमारी गौरवशाली संस्कृति, कहाँ गये गरीमामय संस्कार।
फिर से आ गया है समय मातृशक्ति को अपने दम पर बुराई से लड़ना होगा,
मातृशक्ति को जागृत करके स्वयं सुजलाम भारत की ओर बढ़ना होगा।
आओ बहनों मिलकर संकल्प करें
मातभूमि को समर्पित करे अपनी कर्तव्यशाली संतान।
तभी तो हर ओर से नारा गुजेगा जयतु जयतु जय हिंदुस्तान।

पुलवामा हमले ने कर दिया साबित

कब तक देंगे श्रद्धांजलि अपने जवानों को अब,
दुश्मनों को तिलांजली देने का समय आया है।
उठो, जागो मेरे देशवासियों अब गद्दारों का खात्मा करने का समय आया है।
हाँ, यही कह रही हूँ मैं आस्तीन के साँपो को कुचलने का समय आया है।
सुनिये मोदीजी आ गयी है फैसले की घड़ी गद्दारो संग लढ़ना है हमे तानकर ५६ इंच सीना।
पुलवामा हमले में कर दिया साबित कि आतंकवाद है कुत्ता कमीना।
यही है सही मौका इन खुंखार कुत्तों को कुत्ते की मौत मार दो।
इनको खड़े-खड़े अल्लाह से मिला दे सेना को ये अधिकार दो।
कबतक खेलेंगे लुका-छुपी का खेल, कबतक झेलेंगे हम अपनी पीठपर गोली।
सुनो जवानों (वीर) नारीशक्ति अबकी बार मनाना चाहेगी आंतकियो के खून की होली।
अब घर-घर में घुसकर खत्म कर दे देश का गद्दार।
बहुत बह गया बेगुनाहो का खुन अब सुननी है दुश्मनों की चीख चित्कार।
माँ की ममता माँग का सिंदूर मांगता है सिर्फ इंतकाम, इंतकाम, इंतकाम।
आओ गद्दारों को कराए जन्नत की सैर बोलकर श्रीराम।
जिन्होंने बुझाऐ हमारे घरो के चिराग उनके घरों को जलाकर राख कर दो।
जहाँ बसते है हमारे दुश्मन उनकी धरती को बेचिराग कर दो।
ताकि कोने-कोने से गूंजे केवल वंदे मातरम का नारा।
आओ जेहाद मुक्त बनाए हिंदुस्तान हमारा।
कुछ ऐसा कर जाओ कि दुनिया के नक्शे से मिट जाये पाकिस्तान।
धरती अंबर से एक ही नारा गुंजे जयतु जयतु जय हिंदुस्तान।

भाग भाग भाग रे फिरंगी

दुर्गा रुप धारण करके जब आती थी वो रणांगन में।
घबराहट सी पैदा हो जाती थी अच्छे-अच्छों की धड़कन में।
बच्चा, बूढ़ा हर कोई जानता है वो तो हमारी रानी लक्ष्मीबाई
फिरंगी काँप उठते थे, सुनकर
भाग.. भाग.. भाग.. रे, फिरंगी झांसी की रानी आई।
छोटी सी उम्र में वो खूब लड़ी थी गद्दारों से, वीरता का ढोंग रचने वाले भी घबराते थे उसकी तलवारों की धारों से।
तुम्हे कैसे भूले भारत की नारी, हम पर कर गई हो अनगिनत उपकार।
ऐसी वीरांगना को मन ही मन नारीशक्ति करती है नमन बारंबार।
बस यही सोचा है रण में न सही जीवन में झाँसी की रानी सा शुरवीर बनना है।
अब तो दुर्गा रूप धारण करके ही जीना और मरना है।
ठान लिया है मैंने अपने जीवन को भारत माँ के चरणों मे करना है समर्पित,
कुछ ऐसा कर चलूँगी की भूत, भविष्य, वर्तमान मेरे नाम से जायेंगे गौरवान्वित।
आज तक हमने सुना था की वीरता और ममता का रुप था।
झांसी की रानी कुछ ऐसा करम मैं भी करुंगी,
कि अमर हो जायेगी मेरी जीवन कहानी।
इसी के साथ आप सभी को रुपाली बाहेती का प्रणाम तो
आओ बहनों मिलकर बोले जय जय श्रीराम।

माँ की कोख से

शब्दों में जो पिरोया जाये वो शब्द माँ नहीं, वो तो स्वयं प्यार की बोली है।
मैंने तो माँ को ही मेरे संग पाया, जबसे अपनी आँखे खोली है।
माँ है ममता की मूरत ईश्वर स्वरूप वो होती है।
जीवनरूपी समुंदर में बिखेरती वो स्नेह के मोती है।
पर न जाने क्यूँ हमें जीवन देनेवाली का हम पल-पल करते है अपमान।
भूल जाते है हम उसकी वजह से बनी है हमारी पहचान।
जिसने हमे हँसना सिखाया, हम उस का ही दामन आँसुओ से भर देते है।
जिसने हमारे जख्मों को भरा, हम उसके दिल पर घाव कर देते है।
अरे ईश्वर भी माँ की कोख से जन्म लेने को है लालायित,
इसी जन्मदात्री को दुःख देकर स्वयं को महसूस करते हैं गौरवान्वित।
मित्रो समझो मेरी बात जो समझाने जा रही हूँ।
आज मै आपके सामने माँ का स्वरूप ही व्यक्त कर रही हूँ।
धरती, भारती, गौ हो या वो जिसने हमे जनम दिया है,
माँ के हर स्वरूप हमने स्वार्थवश दर्द ही दर्द दिया है।
आज जो न की माँ की कदर, हम तरस जायेंगे पाने को माँ का प्यार।
क्यों भूल गये तुम श्री गणेशजी को भी तो मिले माँ पार्वती से संस्कार।
माता-पिता का जो सम्मान किया प्रथम पूजा का पाया है उन्होंने मान।
माँ के कारण रंगबिरंगे फूल बनकर जीवन बगिया में खिला है हर इन्सान।

परिवर्तन की ओर

सूरज से प्रेरणा लेकर परिवर्तन की ओर चलते जाना है।
चाँद न बन सके औरों के लिए तो क्या स्वयं की राह में दीप बनकर जलते जाना है।
माना की चाँद की रोशनी में तुम्हारा अस्तित्व नजर नहीं आयेगा।
पर ज्ञान के दीप बनकर जलो तुम अज्ञानरूपी अंधेरा भाग जायेगा।
जरा देखो तो एक-एक बूंद से मिलकर ही तो समुंदर बना है।
कई बार डुबकियाँ लगाई तब कहाँ गोताखोर के हाथो मोतीयों को चुना है।
भूल जाओ जो गलतियाँ हुई, उनसे प्रेरित होकर आगे बढ़ते जाओ।
अपनी अच्छाईयों को तराश कर स्वयं की बुराई से लड़ते जाओ।
हर गलती की माफी है यहाँ, कोई सोच समझकर करता नहीं गुनाह।
जो अपने मन को पावन, पुनित करले ईश्वर के चरणों में मिल जाती उसे पनाह।
स्वयं को पहचानों तुम, इंसान हो इंसानियत की मिसाल बनो,
तुम इंसान हो तो याद रखो, छोड़कर हैवानियत, इंसान ही बनो।

तुम्हारी जय हो

जिनकी वीर गाथाऐं सुनकर आज भी पुलकित हो जाता है सारा हिंदुस्तान।
वो तो है हिंदुत्व तिलक महाराणा प्रताप, उनकी वीरता को कोटि-कोटि प्रणाम।
माँ जयंती के गर्भ से जन्मे, उदयसिंग के लाल ने मुगलों संग लड़ी लड़ाई है।
अकबर जैसे मुगलों को झुकाकर आपने हिंदुत्व की शान बढ़ाई है।
आप जैसे वीर की सवारी पाकर चेतक ये चलता जैसे बतियाता हो हवाओं संग।
आपके साथ उसे भी चढ़ गया राष्ट्रभक्ति का केशरीया रंग।
इस जहान से जाते-जाते वो दे गया स्वामिभक्ति की अनूठी मिसाल।
आप भी तो जाते-जाते हमारे दिलो में जगा गये राष्ट्र प्रेम की मशाल।
जो आप न होते तो हमें न होती हिंदुत्व शेर की पहचान।
आप जैसे वीर को पाकर पावन हो गयी धरा नाम है जिसका राजस्थान।
आपकी जयंती पर आपको करती हूँ अभिवादन, उसे कीजिये स्वीकार।
मेरा रोम-रोम कह रहा है, तुम्हारी जय हो वीरता के हिंदुत्व सरदार।
आपसे प्रेरित हो गई मैं भी माँ भारती संग निभाऊँगी राष्ट्रभक्ति का बंधन।
अपने दिल में ज्योत जलाकर मै भी समर्पित कर रही हूँ अपना जीवन।

वाह रे पुरुष!

वाह रे पुरुष! तुमने ही बनाये कानून, तुमने ही प्रचलित कर दी क्रूर प्रथा।
शोषण करते सदैव नारी का, न समझे तुम उसके हृदय की व्यथा।
नारी जो घर छोड़कर जाये तुमनें उस पर चरित्रहीनता का लांछन है लगाया।
राजकुमार, सिद्धार्थ जो घर छोड़कर गये पुरुष प्रधान समाज ने उन्हे बुद्ध कह के अपनाया।
राजमहल छोड़कर दशरथ पुत्र जो गये वन में जगत के लिए कहलाये श्रीराम।
सीताजी ने जो निभाया सात फेरों का वचन देनी पड़ी अग्निपरीक्षा और इम्तेहान।
तुम तो यही कहते आये नारी नहीं है सुरक्षित, किसकी वजह से ये न कभी बोला।
घुरते रहे उसका बदन जानवरों सा कभी न अंर्तमन उसका टटोला।
उसे छलने की खातिर कभी दुःशासन, तो कभी बन गये रावण।
तुम्हारे अत्याचारों से लड़कर साबित कर दिया कि नारी तो है, पतित पावन।
हे पुरुष तुमसे विनती है कभी तो मित्र बनकर थाम लो उसका हाथ।
तुम्हारे सातों वचन की खातिर देगी वह जनम-जनम का साथ।

नारी को अबला कहने वालों

नारी को अबला कहने वालों, नारी क्या नहीं कर सकती है,
नारी है अगर लक्ष्मी, तो नारी ही दुर्गा, काली बन सकती है।
जरा सोचो बहनों नारी ही नारी की दुश्मन क्यों होती।
घर वालों की जिद के आगे माँ की ममता रोती है।
दादी तो चाहती है अपने पोते को गोद में खिलाना।
भूल जाती है वो उसे भी तो एक माँ ने ही जन्म दिया न।
नारी शांति की मूर्ति है और चिढ़ जाये तो चिंगारी है,
दुनिया में सबके लिए धरती माँ ने बाहें पसारी है।
गौर से देखो जब ये गंगा मैय्या बनकर बहती है,
राह के काँटो पत्थरों को भी ममता भर-भर देती है।
बेटी बगिया की कली, बेटे जो खिलते हुए फूल होते हैं।
बेटी देती है प्यार की खुशबू, बेटो के शब्द दिल को चुभोते हैं।
बेटे जो होते है कुलदीपक, तो बेटी दो घरों की रोशनी होती है।
बेटा है अनमोल ही तो बेटी सीप में छुपा हुआ मोती है।
इंदिरा, कल्पना, प्रतिभा ने देश की शान बढ़ाई है।
फिर भी मैं न समझी क्या बेटियाँ होती पराई है।
बेटी को ठुकराने वालों लक्ष्मीपूजन क्यों करते हो?
जो लक्ष्मी है इतनी प्यारी, तो बेटी को अपनाने से क्यों डरते हो?
सारी दुनिया को आज मैं एक बात बताना चाहती हूँ।
बेटी को मैं हर घर की शोभा बताना चाहती हूँ।
आज न बचाया बेटी को तो हर आँगन सूना हो जायेगा,
और बेटो की शादी सच्चाई से हर माँ का सपना बन जायेगा।

काश ! काश ! काश !

चाय वाले के बेटे से, नमो-नमो बनने का जुनून क्या होता है,
कोई पूछे मेरे पंत प्रधान से।
धर्म की बेड़ियों से दूर रहकर,
ज्ञानमय जीवन बिताकर, मिसाईल मैंन कहलाने का जुनून क्या होता है,
कोई पूछे हमारे आदर्श डॉ.अब्दुल कलाम से।
माता-पिता की आज्ञा की खातिर राजपाट ठुकराकर वनवास जाने का जुनून क्या होता है, कोई पूछे मेरे श्रीराम से।
दिल में राधा की प्रीत छुपाकर, दुनिया को गीता ज्ञान देकर, मनमोहक मुस्कराने का जुनून क्या होता है,
कोई पूछे मेरे घनश्याम से।
नरेद्ररूपी छोटे से बीज से हिंदुत्व वादी विशाल वटवृक्ष बनने का जुनून क्या होता है,
कोई पूछे तेजस्वी स्वामी विवेकानंद से।
दुनिया के छोटे से कोने में जन्म लेकर विश्वविख्यात चौंपियन बनने का जुनून क्या होता है,
कोई पूछे विश्वनाथन आनंद से।
नकारी हुई आवाज को दुनिया में बिग बी की पहचान दिलाने का जुनून क्या होता है,
कोई पूछे फिल्म जगत के शहंशाह अमिताभ से।
अपना जीवन जंगल मे बिताकर, दुश्मनों के छक्के छुड़ाते हुए महाराणा कहलाने का जनुन क्या होता है,
कोई पूछे हिंदुत्व वीर प्रताप से।
काश! काश! काश!
ये जुनून फिर से हिंदुस्तान की युवा पीढ़ी के रग-रग में समा जाये,
हर मां जीजाबाई और पुत्र वीर शिवा बन जाये,
तो मेरा देश फिर से सोने की चिड़िया वाला हिंदुस्तान बन जाये।

तुम ही तो हो मेरे कर्ण!

दोस्ती का जिक्र होने पर जिसकी याद आये वो तुम हो।
मन ही मन जिसकी फिक्र होती जाये वो तुम हो।
तुम ही तो हो मेरे कृष्ण, तुम ही तो हो मेरे कर्ण।
तुम ही हो मेरा रजत, तुम ही हो मेरा स्वर्ण।
ईश्वर की दी हुई सबसे प्यारी सौगात तुम हो।
मेरे जिंदगी का सबसे हसीन इत्तेफाक तुम हो।
जो मेरे दिल की धड़कन कहलाये वो तुम हो।
जो कभी खामोशी से तो कभी बातों से मेरा मन बहलाये वो तुम हो।
तुम्हे पाकर ही तो सही मायने में समझा है मैंने, जीवन तुम ही हो।
मेरे हृदयरुपी सुरों की वीणा नूतन, तुम से ही जुड़ा मेरे एहसासों का बंधन।
मैंने किस्मत से जिसे पाया वो तोहफा तुम हो।
मित्रता का रूप सबसे अनोखा तुम हो।
जो तुम नहीं तो मैं तुम से ही तो, मैं हमको समझ पायी जो तुम्हीं हो।
जो जीवन के गम रूपी अंधेरे में प्यार की रोशनी बनकर है आयी।
इस कविता के रूप में, मैं भी करती हूँ वादा आखरी सांस तक निभाऊँगी तुम्हारा साथ।
तुम भी दे दो वचन मेरे संग आजीवन चलने का आगे बढ़ाओ अपना हाथ।
दुनिया में स्थापित करनी है, अनुठी दोस्ती की मिसाल,
कि हमारी ओर देखकर सबके मन में आये ये सवाल।
क्या सचमुच इतना हसीन होता है, दोस्ती का सफर सुहाना।
दोस्त जो मिले जनम दोबारा। तुम हमें ही अपना साथी बनाना।

महाभारत की रण दुंदुभी बजाई है

बहुत पढ़ लिया भगतसिंग जैसे वीरों के बारे में अब कुछ कर दिखाने का समय आया है।
हे युवक! बहुत भाग्यशाली हो तुम जो हिंदुस्तान की पावन धरा पर तुमने जनम पाया है।
सोचो, समझो तुम यह समय इतिहास पढ़ने का नहीं वरन् गढ़ने का है।
देश में छुपे हुये गद्दारों संग वीर शिवाजी बनकर लड़ने का है।
आरक्षण मांगने की बजाय तुम बन जाओ माँ भारती के संरक्षक।
काट डालो दुश्मनों के नापाक सिर जो करे कोशिश बनने की उसके भक्षक।
फिर से आया है, समय कूटनीति संग तुम्हें युद्धनीति भी करनी होगी आत्मसात।
तभी तो माँ भारती देख पायेगी रामराज्य की नवप्रभात।
हे युवक! उठो जागो अपनी मातृभूमि का गौरव बढ़ाना है,
तुम्हे चारो ओर अपने राष्ट्र कर्तव्य के प्रति जागरूक होकर
दृढ़ कर दो राष्ट्रभक्ति की अनूठी डोर पृथ्वीराज, प्रताप जैसी अपने अंदर जगा दो राष्ट्रभक्ति की मशाल।
माँ भारती के रक्षाकवच बनने हेतु थाम लो तुम सपने हाथ में तीर कमान और ढाल,
जो गलती से भी डाले उस पर नजर तुम उखाड़ दो उसकी खाल।
आओ वीर बनकर भारत माँ के चरणों की खाते हैं शपथ,
हरपल चलेंगे उसपर जो आने वाली पीढ़ी को दिखा दे शांति का पथ।
पर याद रखो कभी कभी शांति स्थापित करने के लिए शस्त्र उठाना हो जाता है अनिवार्य,
यकीन न हो तो ग्रंथो में से गीता को पढ़कर जान लो श्रीकृष्ण का अद्भुत कार्य

कि कैसी सहजता पूर्ण वाणी से शस्त्र उठाने के खातिर प्रेरित किया अर्जुन को,
जो अपनों को शत्रुपक्ष मे देखकर छोड़ चला था महाभारत के रण को।
हमारे पूर्ण पुरुष कृष्ण ने हमे ये सीख दिलाई है। शांती स्थापित करने हेतु ही उन्होंने महाभारत की रणदुदुंभी बजाई है।
हमें भी शास्त्रों के साथ शस्त्र थामने होंगे कुछ ऐसी घड़ी फिर से आई है।
धर्म स्थापना हेतु, माँ भारती ने अपने वीर पुत्रों को पुकार लगाई है।
आओ आप हम सब माँ भारती की रज का तिलक अपने माथे पे लगाएंगे।
जब होगी अधर्म की जयजयकार तब धर्मरक्षा की खातिर कफन बांधकर चले आयेंगे।

याद करो पुरूष

अरे वा भाई! कितनी आसानी से बोल देते हो प्रगति पथ पर बढ़ रहा है मेरा हिंदुस्तान,
हरपल हो रहे है नारी अत्याचार, मर रही है इंसानियत, जिंदा है केवल इंसान।
अरे दुष्टों ये क्यों भूल जाते हो जिसने तुम्हें जनम दिया है, वो भी तो एक नारी है।
इसी ईश्वर स्वरूप नारी की जिंदगी तुमने नरकमय कर डाली है।
याद करो पुरुष तुम्हारा इतिहास और खुली आँखो से देखो तुम्हारा आज।
कभी बाबर, हमायूँ तो कभी दुःशासन बनकर लुटते आये तुम उसकी लाज।
कड़वी सच्चाई है नारी को प्रताड़ित करने वाली जाति है केवल पुरुष, न वो हिंदु है, न मुसलमान,
धर्म के आड़ में लड़ने वाले कभी तो मन की आँखो से पढ़लो वेद पुराण।
वेदों ने नारी को शांति स्वरूपा, शक्ति स्वरूपा कहकर अपनाया है।
उसी की अस्मत को लूटकर तुमने अपनी हवस की भूख को मिटाया है।
मंदिरो में पूजते आये तुम नारी को, जगत जननी माँ बनकर
और घर की लक्ष्मी को नोचते रहे तुम अबला बना कर।
जरा सोचो! तुम्हे जनम देने की खातिर सहती है हर वेदना के साथ प्रसव का भी दर्द,
तब कहीं जाकर तुम आते हो दुनिया मे और कहलाते हो मर्द।
और इसी जनम देने वाली संग रिश्तों की आड़ में पल-पल तुम अन्याय करते हो।
सच बताना हे मानव स्वयं के अंतर्मन मे झांकने से क्या तुम नहीं डरते हो?

बेटी हो तो नीरजा जैसी

नीरजा यह नाम सुनते ही विदीर्ण हो जाते है मेरे दिल के तार।
कई लोगों को जीवन दे दिया खुद चली छोड़कर ये संसार।
वक्त जो आया हिरणी सी कोमल बच्ची ने शेरनी का रूप किया धारण,
और नारी है कोमल नहीं कमजोर जगत के सामने रख दिया उदाहरण।
तुम्हारी कोमल मुस्कुराहट के पीछे छिपी थी एक वीरांगना
जिसने अपनी वीरता के साथ दुष्ट आंतकियो का किया सामना
कईयों की जिंदगी बचाने की खातिर दांव पर लगा दिया खुद का जीवन।
तुम्हारे किस्से जितनी बार सुनें द्रवित हो उठता ये मन।
शेरनी सी दहाड़ न पायी तो क्या तुमने वीरता दिखलाई शेरनी जैसी।
छोटी सी उम्र में कुछ ऐसा कर गयी की हर माँ कहे सचमुच बेटी हो तो नीरजा जैसी।
नीरजा तुम पर लिख पायी चँद पंक्तिया तो महसूस कर रही हूँ गौरवान्वित स्वयं को।
जाते-जाते तुम हमे सिखला गयी सहजता से जीत सकते है, हम मृत्यु के भय को।
तुमपर जो लिखने बैठी, करने लगी मैं अपनी ही भावनाओं का मंथन।
अंत मे तुमारी शहादत को करती हूँ मैं शत-शत नमन।

धिक्कार है

धिक्कार है! धिक्कार है! धिक्कार है! धिक्कार है!
अमानवीय कृत्य बलात्कार है, अशोभनीय कृत्य बलात्कार है।
आजकल देश के कोने- कोने से सुनने को मिलती है, एक ही खबर,
आईये डालते है, एक नजर आज के बलात्कार पर।
बलात्कार! बलात्कार! बलात्कार! चीख चीत्कार! चीख चीत्कार!
नारी तू कब तक सहती रहेगी ऐसें निर्मम अत्याचार, स्वयं को तू पहचान, तू है अद्‌भुत शक्ति का भंडार।
हाँ उठ जाग नारी तुझे अबला से सबला बनना है, जो राह है जाये तुझे स्वयं सिद्ध बनने की ओर उसपर चलना है।
अब नहीं सहनी बहनों, घुटन कुत्सित सांसों की, कब तक चुपचाप सहोगी वार कुत्सित नजरों की।
आज इसी वक्त ठान लो अपने हाथ में रखना है मिर्ची, तेजाब जैसे जालिम हथियार।
हमारी संस्कृति ने हमें सिखाया जिस हाथ में होते है कंगन वही थाम सकते हैं तलवार।
आधुनिकता के इस युग में नहीं सुरक्षित हर तरह से अत्याचार हो रहे है हम पर।
हत्यारों से चाकू, तलवारों से फोड़ डालो उसे तुम्हारी ओर जो उठे नजर हवस भर।
याद करो हमें रानी लक्ष्मीबाई, माँ जीजाबाई से मिली है सशक्त पहचान।
काट दो वो गर्दन जो छेड़ने की खातिर बढ़े तुम्हारे तरफ और बचा लो खुद का आत्मसम्मान।
तोड़ दो उन हाथों को जो छूकर तुम्हें करना चाहे निर्वस्त्र..

न भूलो तुम क्षत्राणियों ने अपनी सुरक्षा की खातिर शास्त्रो संग थामे थे शस्त्र,
ये घड़ी इम्तेहान की है. दुर्गा, काली, चंडीका का रौद्र रूप तुम्हे धारण करना होगा।
इन नृशंस संहार करकर ही वीरांगना के रूप में तुम्हे मरना होगा।
स्वयं को इतना तेजस्वी बनाओ की तुम्हें छूना तो दूर, बुरी नजर से देखने को भी जालिम थरथराये।
तुम्हें पाने की जो कोई सोचे भी तो सपने अंजाम को सोचकर उसकी रूह कांप जाये।
गोली चला दो कहने से नहीं होगा, कुछ अपनी आत्मरक्षा के खातिर बेझिझक चलाओ तुम गोली,
और विश्वास के साथ इन दृष्टों के खून की तुम खेलो होली।
आओ बहनों मिलकर हम फिर से एक बार रामायणकालीन परंपरा को चलायेंगे,
उस युग में हनुमानजी नें जलाई लंका, हम तो अपने हाथो पर कुकर्मियों को जलायेंगे।
आज से, अभी से पूरे देश में चलाना होगा बलात्कारी मुक्त समाज का अभियान।
तभी सही मायने में मुस्करायेगी भारत माँ और फिर से हमारा भारत कहलायेगा महान।

हो रहा है संस्कारो का दहन

संस्कार ही तो इंसान की सबसे अनमोल धरोधर कहलाये।
संस्कार बन जाये खिलता हुआ कमल हमारा जीवन है, सरोवर बन जाये।
पर आज आधुनिकता के इस दौर में मिट रहा है संस्कारों का नामो निशान।
संस्कारहीन जीवन शैली के कारण इंसानियत मर गई, जिंदा है बस इंसान।
अपनी माता बहनों से कुछ लफ्जों में मैं अपने मन की बात बताना चाहती हूँ।
संस्कार का क्या है महत्त्व मनुष्य जीवन में ये इस कविता के माध्यम से समझाना चाहती हूँ।
संस्कारो के कारण ही तो अच्छाई और बुराई के प्रतिक बन गये राम और रावण
वो विदेह जी के संस्कार ही तो थे जिनमें तपकर सीताजी बन गयी पवित्र पावन।
कैकैयी के कुसंस्कारो के कारण ही तो रावण हर लाया सीता माई।
वो तो कौशल्या के संस्कार ही तो थे जिन्हें निभाने की खातीर वन को गये रघुराई।
अपने कुसंस्कारो के कारण ही तो दृष्ट मुगल हमारी क्षत्राणियों पर डालते थे बुरी नजर।
संस्कारो से परिपूर्ण क्षत्राणिया अपना धर्म बचाने की खातिर कर गई जोहर।

आधुनिकता इस युग में बड़ी सहजता से हो रहा है संस्कारो का दहन।
पहले तो लंका वाला एक था अब तो मानो हर घर से निकल रहे हैं रावण।
आधुनिकता का चोला ओढ़ एकल परिवार की परंपरा के कारण युवा पीढ़ी शहरों की ओर भाग रही है।
जाने अनजाने शहरो की चकाचौंध में उनकी हैवानियत जाग रही है।
हमारे मूल संस्कार जागृत करने की खातिर सबसे पहले तो हमें परिवार जोड़ने होंगे।
इन निर्जीव मोबाईल, टीवी संग जुड़े हुए भ्रामक रिश्ते हमे तोड़ने होंगे।
समाज के स्त्री पुरुष सभी को जागरूकता से जोड़ने होंगे बिखरे परिवार।
माता पिता को भी सुख सुविधा की जगह अपने बच्चो को देना होगा अपना समय और प्यार।
प्यार का जो बीज बचपन में बोयेंगे,कुछ सालों बाद वो वटवृक्ष बन जायेगा संस्कारो का,
और देखते-देखते सफाया हो जायेगा समाज से कुरितीया और कुविचारो का।

ले चलो पूर्णत्व की ओर

इक्कसवी सदी में भी कुछ अजीब से है मेरे हालात,
आज भी नारी धर्म के नाम पर निलाम हो रहे है मेरे जज्बात।
जब-जब हर व्रत मैने अपने जीवनसाथी के नाम किया,
तब जाकर इस दुनिया ने मुझे सुहागन का नाम है दिया।
सातों फेरो के वचन निभाने की खातिर
बचपन के रिश्ते नाते छोड़कर आती है तुम्हारे पास।
कभी तुम भी तो कोशिश करो कि समझो मेरे खामोश जज्बात एहसास।
जरा समझो तुम धरती में जो समा जाये मैं वो सीता नहीं।
कृष्ण के प्रेम में जो विरहणी बन जाये मैं वो राधा नहीं।
मैं नारी हूँ आज के युग की, मेरी अपनी सोच, मेरी अपनी पहचान है।
दुनिया की हर चीज से ज्यादा प्यारा मुझे मेरा आत्मसम्मान है।
तुमसे भी इतना ही कहूँगी की जरा सा छोड़कर अपना पुरुषी अहंकार,
मुझपर लुटा देता दो चार पल के लिए निश्चल प्यार।
मैं नहीं कहती कि तुम मुझपर कर दो धन दौलत की बरसात।
बस जब कभी घबरा जाऊँ मैं हूँ न कहकर थामलो मेरा हाथ।
अंधेरी रात में जब घबरा जाऊँ तुम चाँद बनकर आ जाओ,
जब सुबह की किरण से हो मेरा सामना तुम मेरा सूरज बन जाओ।
कभी जो जिंदगी की उलझन बढ़ाने लगे कोई सवाल।
बिना बोले तुम समझ जाओ मेरे दिल का हाल।
मेरे अनकहे हर सवाल का जवाब बन जाओ तुम।
जिंदगी के कड़वे पलों में कुछ पल का हसीन ख्वाब बन जाओ तुम।
अधुरी सी हूँ तुम बिन, मुझे ले चलो पूर्णत्व की ओर।
मैं प्यार के राम बंधन में बन जाऊँगी तुम बन जाओ मेरी रेशम डोर।

५६ इंच सीना तानकर

नमो-नमो सुनते ही हर भारतीय के चेहरे पर आ जाती है गर्वभरी मुस्कान।
नरेंद्र मोदी है वो, हिंदुस्तान के वीर नायक के रुप में बनायीं जिन्होंने अपनी पहचान।
हमारे इस महानायक ने ५६ इंच चौड़ा सीना तानकर हटायी कश्मीर से ३७० की धारा।
उनके इस निर्णय को देखकर हुआ आश्चर्यचकीत हो गया जहान सारा।
उनके इस निर्णय से भारत का सशक्त रूप उभरकर सबके सामने आया है।
कश्मीर की बेटे को (बिछड़े) मिलकर माँ भारती का चेहरा निखर आया है।
धन्य है आप जो एक से एक निर्णय राष्ट्रहित में लिए जा रहे हो।
देश का नायक कैसा हो इसकी मिसाल अपने कार्यों से दिये जा रहे हो।
ऐसे देश के प्रधान को दिल से सारा हिंदुस्तान दे रहा गर्वान्वित होकर है बधाई
कि आखिरकार इस राम भक्त ने कर ही दी रामलला की रिहाई।
हिंदुस्तान की संस्कृति में ही ऐसा होता है
भक्त भगवान को छुड़ाने चले हैं।
राम मंदिर की सुनवाई सुनकर हिंदुस्तान के हर घर में दीप जले हैं।
लाखो दिलों पर राज करने वाले मोदीजी जो आप पर लिखने बैठी तो शब्द भी आ गये बनाकर कतार।
कहने लगे आप संग हमें भी हिंदुत्व शेर का व्यक्त करना है हृदय से आभार,

एक वो नरेंद्र था, जिसने अंग्रेजी विचारा धारा से हटाकर हिंदुत्व की अलग पहचान बनाई

एक ये नरेंद्र है, जिनके राज में फल-फूल रही है, हमारी भारत माई

देश की बेटियों को न्याय दिलाने की खातिर आज बहुत ही कड़ा कदम आपने उठाया है।

आपके इस निर्णय के स्वागत में सिंहपुरुष सभी ने अपना शिश झुकाया है।

मोदीजी यहीं शुभकामना देती हूँ, आपके कदम यूँ ही बढ़ते रहे राष्ट्रहित की ओर।

भाग्यशाली है हम कि हमारे मातृभुमि की आपने संभाली है बागडोर।

धन्य हो गयी यशोदा बेन जिनके गर्भ से जन्म आपने पाया है।

मातृभूमि का कर्ज आपने अपने पसीने के एक-एक कतरे से चुकाया है।

सुनहरे भारत का इतिहास पढ़ा जायेगा तो आपके व्यक्तित्व से महक उठेगा पढ़ने वाला हर किरदार,

और उसके मुख से यही निकलेगा आपकी जय हो जय हो हिंदुत्व के सरदार

कुछ यूँ कर रहे हो कार्य कि चिर पुरुष के रूप में आप अमर रहोगे सदा,

आज तो आपकी विजयी मुस्कान देखकर अपनी कारीगरी पर मन ही मन खुश हो रहा होगा। वो खुदा।

मौका मिलते ही

कलम और कविता को मिले एकांत में कुछ ऐसा हुआ उनके बीच वार्तालाप,
मौका मिलते ही कलम बोल उठी, बहन जो मैं न होती तो दुनिया कैसे जानती कौन थे पृथ्वीराज और कैसे थे महाराणा प्रताप।
कभी समझा हैं मेरी वजह से तो तुम सबके सामने किसी के मन के भाव रख पाती हो।
मैं बांध देती हूँ तुम्हे एक-एक शब्द में तब कहीं जाकर तुम कविता रूपी माला बन जाती हो।
सच-सच बताना सखी क्या हमारे इस खामोश रिश्ते का तुम्हे कुछ भी नहीं है एहसास।
कि तुम्हे तुम्हारे रुप में ढालने की खातिर मुझे करने पड़ते है महते प्रयास।
इतना जो सुना कविता ने बोला, हाँ सखी जो तुम न होती हो कैसे होती ग्रंथो की उत्पत्ति।
तुम बीन कौन पढ़ता वेद पुराण, कैसे समझते कि कौन है इस सृष्टि की निर्मात्री।
सचमुच सारी मानव जाति पर बड़ी सहजता से तुमने एहसान किया है।
एकांत पूर्ण जीवन स्वयं बिताया और हमे अद्‌भुत ज्ञान दिया है।
इस बात पर कलम कहने लगी बोलो जो मैं न होती तो होता रामायण, महाभारत का निर्माण,
मेरी सहायता मही तो वाल्मिकी, महर्षि कर पाये ईश्वर का गुणगान।

मैं नहीं कहती तुम हरपल मेरी सराहना करो, मेरी राह में तारीफ के फूल बिछा दो।
पर कुछ पल के लिए तो सखी, मेरी त्याग भावना का शोर मचा दो।
कविता जवाब में कहने लगी आज संघर्ष स्वीकारती हूँ इस बात को,
दिल से मैं शब्द तो तुम अर्थ, सर्वगीत कहती हूँ।
सारी महफिल से आज अपनी प्रस्तुति के अंत में तुम्हे दे रहीं यूँ आभार,
आओ तुम भी इन शुभकामनाओं की दिल से करो स्वीकार।

मुझ को है अपने पंखों पर विश्वास

ओ चिड़िया इतनी सुबह उठ जाती हो,
क्या ठंडी हवा तुम्हे इतना सुहाती है।

दोपहर को धूप में दाना चुगने जाती हो,
क्या उसकी तपन तुम्हें नहीं सताती है।

बहुत सोचा मैंने पर समझ नहीं पायी मैं ये बात,
कैसे बारिश से तुम अपना घोंसला बचाती हो?

इन तुफानों से क्या मन ही मन तुम नहीं घबराती हो?
सुनकर मेरी ऐसी बातें बोली (मुस्कुराकर) चिड़िया रानी,

मुझको है अपने पंखो पर विश्वास क्यों न समझे तू दीवानी।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम- **सौ.रुपाली रुपेश बाहेती**

जन्मतिथि- १५-४-१९७९(बसमत)

कार्यक्षेत्र- डायरेक्टर- श्री आर.वी.एन.
Marketing and Trading company
डायरेक्टर-श्री आर.वी.एन
Tours and Travels (your cab)

शिक्षा- बी.ए.

सामाजिक क्षेत्र- १. संस्थापिका अध्यक्षा- समर्पण फाऊंडेशन
२. राष्ट्रीय प्रवक्ता- महिला व बाल विकास संस्था (टिटवाला, मुंबई)
३. कारंजा तालुका सचिव- माहेश्वरी महिला संगठन
४. कारंजा तालुका संयोजिका- मातृशक्ति (विश्व हिंदू परिषद)

विशेष रुचि- व्याख्याता श्री गजानन महाराज जीवन चरित्र

प्रकाशन- माहेश्वरी पत्रिका नागपुर से कविता प्रकाशित, महेश दर्पण अमरावती से लेख प्रकाशित तथा जालना से प्रकाशित होने वाले किताब में भी लेख प्रकाशित, नूतन ज्योति पत्रिका में सुविचार प्रकाशित।

विशेष उपलब्धि- दो संगीतमय नाटक का प्रस्तुतीकरण
१. बायांनो पोरांनो ऐका हो ऐका (शेतकरी विडंबना प्रस्तुतीकरण)
२. आओ जोड़े घर परिवार बच्चों को दे उचित संस्कार

Email- rupalirbaheti@gmail-com
Google search- rupali baheti speech

फोन नंबर- ८३८१००६४६२

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-048-3
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध